ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 249-250
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

'निराला' एक व्यक्तित्व

डॉ0 सुधा राय

एसो0 प्रो0– अध्यक्ष, हिन्दी–विभाग, राजामोहन गर्ल्स पी0जी0 कॉलेज, अयोध्या फैजाबाद (उ0प्र0), भारत

Received- 10.11.2018, Revised- 16.11.2018, Accepted - 19.11.2018 E-mail: sudhaashokrai@gmail.com

सारांश : ***राजनैतिक एवं सामाजिक विवशता से उत्पन्न, निराशा– 'जलिया वाला बाग' क्रूरतम काण्डों ने छायावाद–युग को जन्म दिया और छायावाद–युग के स्तम्भ हुये 'निराला'।***

पं0 सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1896 (1896) में बसंत पंचमी के दिन हुआ। प्रकाशोत्सव का वह दिन वसन्तोत्सव के उल्लास में सिक्त हो गया। पिता पं0 राम सहाय ने अपनी प्रथम 'धर्म–पत्नी' के देहावसान के पश्चात् दूसरा विवाह किया। प्रकृति की नियति को भला कौन चुनौती दे सकता है? दूसरी सह धर्मिणी 'निराला' को जन्म देने के तीन वर्ष बाद 'गो–लोक वासी' हो गयी। फलतः पण्डित राम सहाय के स्वभाव में रूक्षता–कठोरता ने निवास बना लिया जिसका भयंकर परिणाम निराला जी की लेखनी द्वारा ही साहित्य में उद्घाटित है– "मारते वक्त पिता जी भूल जाते थे, कि वे विवाह के बाद पाये हुये इकलौते पुत्र को मार रहें हैं, मैं भी स्वभाव न बदलपाने के कारण मार खाने का आदी हो गया था। चार–पाँच साल की उम्र से अब–तक एक ही प्रकार का प्रहार पाते–पाते सहनशील भी हो गया था, और प्रहार की हद मालूम हो गयी थी।"

कुंजीभूत शब्द– राजनैतिक एवं सामाजिक विवशता, क्रूरतम काण्डों, छायावाद–युग, वसन्तोत्सव, भयंकर।

इस तरह शैशवावस्था की तरंगो को पार करते हुये पूर्ण वयस्कता के एहसास ने साहित्य–साधना में लीन कर दिया।

अंग्रेजी, बांगला, संस्कृत, हिन्दी के ओजस्वी एवं 'निराला' जब पहली बार अपनी विदुषी एवं परम सुन्दरी पत्नी के हिन्दी ज्ञान के सम्मुख उनका ज्ञान फीका प्रतीत हुआ, इस भाव का अंकन बेझिझक प्रस्तुत किया है– "जिसकी हिन्दी के प्रकाश से प्रथम परिचय के समय, मैं आँखे नहीं मिला सका, लजाकर हिन्दी की शिक्षा के संकल्प से कुछ काल बाद पिता के पास चला गया था, और इस हीन हिन्दी प्रान्त में बिना शिक्षक के 'सरस्वती' को प्रतियाँ लेकर पद साधना की और हिन्दी सीखी थी"

'निराला' ने स्वयं अपनी पत्नी 'मनोहरा' के सौन्दर्य की प्रशंसा अपने शब्दों में लिखी है– "मैंने अपने जीवन में उनसे अधिक सुन्दर अन्य कोई स्त्री नहीं देखी है।"

'मनोहरा' देवी की मृत्यु से उनका मन हार गया घण्टों शमशान घाट पर बैठकर सोचा करते थे। कहा जाता है– सर्वप्रथम श्रेष्ठ कृति 'जूही की कली' उसी प्रेरणा का परिणाम है। पत्नी की सूक्ष्म भावात्मक स्मृतियाँ भी 'निराला' के काव्य में 'निराला' रंग भरती हैं।

निराला जी का जीवन एक खुला हुआ करूण काव्य था। जिसे जो भी देखता है, पढ़ता है उसकी आँखे अश्रुपूरित हो जाती हैं–

"मेरा मन कॉप उठा, याद आयी जानकी
कहाँ तुम राम की कैसे दिये हैं दर्शन!"

बहुमुखी प्रतिमा के धनी निराला पौरूष और प्रगति के भी धनी कवि थे। जैसा प्रभावशाली व्यक्तित्व था वैसी ही प्रभावशाली उनकी कविता थी। 'कामायनी' में मनु के व्यक्तित्व का जो वर्णन 'प्रसाद' जी ने किया है, वैसी ही 'दुर्जेय देह' 'निराला' की थी।

महादेवी जी ने 'निराला' भाई संस्मरण में व्यक्तित्व को उभारने का प्रयास इस रूप में किया है– "गेरू में दोनों मालिन अधोवस्त्र और उत्तरीय कब रंग डाले गये, इसका मुझे पता नहीं, पर एकादशी के सबेरे–सबेरे स्नान, हवन आदि कर जब वे निकले तब गैरिक परिधान पहन चुके थे। अंगोछे के अभाव और वस्त्रों में रंग की अधिकता के कारण उनके मुँह–हाथ आदि ही नहीं, विशाल शरीर भी गैरिक हो गया था, मानों सुनहली धूप में धुला गेरू के पर्वत का कोई शिखर हो"

वाह्य और आन्तरिक व्यक्तित्व का समन्वय देखते–पढ़ते–चिन्तन करते ही बनता है। 'निराला' जी का व्यक्तिगत जीवन अनवरत संघर्षों की एक कहानी है वैसे वो औढरदानी थे। 'अपरा' पर इक्कीस सौ का पुरस्कार संस्था से मिला, रूपया हस्तगत होने से पूर्व नवजादिक लाल की विधवा के लिये संकल्पित कर दिया यह थी महान्ता। उन्होंने लक्ष्मी को हमेशा ठुकराया और आर्थिक तंगी पैर जमाकर उनके जीवन में खड़ी थी, पर व्यक्तित्व निखरता गया। स्वाभिमान से उनका ललाट दीपित था।

निराला छायावाद के उद्घोषकों में से एक थे। आत्माभिव्यक्ति प्रकृति में जीवन का आरोप, प्रकृति का प्रयोग विशिष्ट शब्दावली का प्रयोग आदि छायावाद के जो आवश्यक

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

तत्व हैं, वे सब उनके काव्य में वर्तमान हैं। जिन लोगों के सम्पर्क में निराला जी आये उसको पारिवारिक स्नेह प्रदान किया, औरों को पारस–पत्थर से स्पर्श होने पर सुवर्ण का एहसास होता था।

'निराला' आदर्शवादी थे, सम्प्रति, आदर्श के नाम पर कभी रूढ़ियों और सड़ी–गली परंपराओं का समर्थन नहीं करते थे। साहित्यकार का स्थान कितना ऊँचा होता है, इसके प्रति वे पूर्ण रूप से जागरूक थे। निराला की कविता–अनामिका, परिमल, गीतिका, विविधता का अच्छा उदाहरण है।

एक ओर उनके काव्य में राष्ट्रीय तत्व अत्यन्त मुखर रूप से विद्यमान है। उनकी ''जागो फिर एक बार'' दूसरी कविता का प्रकाषन विदेषी सरकार ने रोक दिया था–

''सिंही की गोद से छीनता है शिशु कौन? अभय हो गये थे तुम, मृत्युन्जय व्योम–केश के समान योग्य जन–जीता है, पश्चिम की उक्ति नहीं गीता है गीता है, स्मरण करो बार–बार जागो फिर एक बार।''

आदि ये ऐसी पंक्तियाँ है, जिनको पढ़कर शायद ही कोई ऐसा होगा जिसकी भुजायें न फड़क उठे। उपर्युक्त कविता हमारे विगत गौरव का जो गीत निराला ने गाया है, वह हमें उत्साह से भर देता है। 'निराला' अपने सभी दार्शनिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक विचारों में एक क्रान्तिकारी के रूप में सामने आते हैं। जाति और सम्प्रदाय के संकुचित बन्धनों को वे स्वीकार नहीं करते थे। राजनीतिक गुटबन्दियों, समाज की जर्जर व्यवस्थाओं और धार्मिक रूढ़ियों पर उन्होंने कड़ा प्रहार किया धारा के प्रतीक से उन्होंने नयी–पीढ़ी के लिय क्रान्तिकारी रूप का अंकन किया है–

''रोक–टोक से कभी नहीं रूकती है, यौवन मद की बाढ़ नदी की।''

निराला मुक्त प्रेम के समर्थक थे, अपनी रचनाओं में सदाशयता का पोषण, मानवता की प्रतिष्ठा की है–

''भारति जय विजय करे, कनक शस्य कमल धरे।''

आदि कविताओं में राष्ट्र–प्रेम निर्झर की भाँति फूट पड़ा है। इनमें प्रगतिवादियों की वह उग्रता है, जो कैपिटलिस्ट को गाली दे सके।

''अबे सुन वे गु लाब! भूलमत पायी खुशबू रंगो–आब! खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट डाल पर इतरा रहा है, कैपिटलिस्ट।''

और प्रयोगवादी का वह स्वच्छन्द चयन है, जो विषय के साथ भाषा को भी उसके भ्रष्ट रूपों में चुन–चुन कर उठाने के लिये गंगा से गन्दे नाले तक को खंगाल सके, नन्दन कानन से कारागार की क्रूर प्राचीरों से घिरे अपराधियों की अपराध कुंठा तक का मंथन कर सके और धरती की गंदी बस्तियों में पल रहे अभिशप्त जीवन से लेकर आकाश–कुसुम के लक्ष्य तक के लिये हाथ फैला सके। इतनी विविधता किसी एक देश काल के किसी एक कवि में नहीं हो सकती है।

आलोचकों की सृष्टि–दृष्टि की अपनी क्षमता व आत्मश्लाघा को इंगित करती है, पर महादेवी जी की –'निराला–भाई' में जो लेखनी उभर कर व्यक्तित्व को हू–ब–हू स्पष्ट करती है। ''मनुष्य जाति की ना समझी का इतिहास क्रूर और लम्बा हैं। प्रायः सभी युगों में मनुष्य ने अपने में श्रेष्ठतम पर समझ में कम आने वाले व्यक्ति को छाँटकर, कभी उसे विष देकर, कमी सूली पर चढ़ाकर और कभी गोली का लक्ष्य बनाकर अपनी बर्बर मूर्खता के इतिहास में नये पृष्ठ जोड़ता है।'' 15 अगस्त सन् 1961 स्वतन्त्रता की वर्ष गाँठ को आपने दुःखद निधन के व्यंग्य से रेखांकित करते हुये– हिन्दी का यह टूटा तारा, महाकवि से महाप्राण बन गया। (रामरतन भटनागर) यह आशय निराला जी के उपनाम की सार्थकता को सिद्ध करने में पर्याप्त है। अन्तर्निहित सौन्दर्य वाह्य सौन्दर्य दोनों साधन–साध्य बनकर साहित्य साधना में सम्प्रक्त रहें। निराला एक व्यक्तित्व आगत–विगत वर्षों साहित्य समाज को जीवन्तता प्रदान करते रहें और रहेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. 'निराला' रामरतन भटनागर।
2. 'आलोचना का पक्ष' रमेशचन्द्रशाह।
3. 'परिमल' – 'अपरा' सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'।
4. भारतीय साहित्य की भूमिका – राम विलास शर्मा।
5. हिन्दी सन्दर्शिका – डॉ0 अवधघोश सम्पादक।
6. 'पथ के साथी' महादेवी वर्मा।
7. विविध अखबार के पठित अंश – 'स्वतन्त्र भारत'।

*****